Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Multi-Disciplinary - ISSN : 2279-0268
Continuous Issue-17 | October – December 2016

आंचलिक कहानी : स्वरुप-विकास

मानवीय सभ्यता के विकास के साथ कहानी की परंपरा सर्व विदित है | स्वातंत्र्योत्तर काल में ही पुरानी कहानी ने नया स्वरुप ले लिया और समयांतर उसमें अनेक आयाम उभरे | युग की आवश्यकता एवं बदलते परिवेश ने कहानी को विविध स्वरुप में प्रस्तुत किया | जीवन-यथार्थ की अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति ने आंचलिक कहानी को जन्म दिया | इतना ही नहीं; उसका अलग स्वरुप आकारित हुआ | नयी एवं समकालीन कहानी विशेष अंचल या क्षेत्र के जीवन को; उसके भावलोक को अभिव्यक्त करने में सफल हुई | आंचलिक कथाकारों ने सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति को न केवल आकारित किया; बल्कि उसे विकसित भी किया|

ऐतिहासिक तौर पर सन १९५२-५३ में हिंदी-जगत में 'आंचलिक' शब्द का आगमन हुआ | डॉ. शिवप्रसाद सिंह ने भी इस मत को स्वीकारा है | आज़ादी के बाद जनचेतनावादी साहित्य की आंधी में यथार्थ-अभिव्यक्ति को लेकर आंचलिक कहानी का सूत्रपात हुआ, जिसके सूत्रधार फणीश्वरनाथ रेणु हैं | दरअसल आंचलिक कथा-साहित्य का आगमन रेणु के 'मैला आँचल' से हुआ| 'अंचल' मूल संस्कृत 'अच' धातु से प्रत्यय योग से बना है | "आँचल शब्द का अर्थ किसी ऐसे भूखंड, प्राप्त भाग या देश विशेष से है, जिसकी अपनी एक विशेष भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, भाषा और अपनी समस्याएँ हो, अपनी विशिष्टता एक जीवित व्यक्ति हो और सामान्य के अन्दर से अपनी विशिष्टता जताता हो, बाहरी प्रभावों ने जिसके वैशिष्ट्य को समाप्त न कर दिया हो |"१ आंचलिक कहानी के स्वरुप को लेकर फणीश्वरनाथ रेणु, धीरेन्द्र वर्मा, आ. नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, राजेन्द्र अवस्थी जैसे विद्वानों ने खूब लिखा है | "आंचलिक कहानी सीमित कथांचल स्थानीय रंग में भाषा और अभिनव शिल्प ये तीन तत्व लेकर रूपायित होती है |"२ अर्थात आंचलिक कहानी में कथांचल के रहन-सहन, प्रथाएँ, उत्सव, आदर्श, आस्थाएँ आदि का यथार्थ अंकन होता है |

यहाँ आंचलिकता और प्रादेशिकता का तत्वत: अंतर समझना आवश्यक है | अंग्रेजी में दोनों के लिए 'रीजन' शब्द प्रयुक्त होता है | 'द वर्ल्ड बुक इनसाइक्लोपीडिया' के अनुसार "एक अंचल वह भौगोलिक भूखंड है जो प्राकृतिक और सामाजिक दृष्टि से आबद्ध रहता है | उसके रीति-रिवाज, आदर्शों, विश्वासों, भौगोलिक मान्यताओं और मनोविज्ञानिक स्वरूपों में इतनी समानता रहती है कि उनके माध्यम से हम उन्हें दूसरे क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अलग कर सकते हैं |"३ सामान्यत: भौगोलिक या राजनैतिक क्षेत्र प्रदेश है, जबकि सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र अंचल है | प्रदेश उन्नत भी हो सकता है; पिछड़ा भी | अंचल नवीन बाह्य प्रभावों की तुलना में पिछड़ा ही होता है | उसी प्रकार ग्रामजीवन और आंचलिकता को एक मानना गलत है | ग्राम कथा में व्यापक भावभूमि होती है; जबकि आंचलिक कहानी में अंचल-विशेष का परिवेश होता है जो अन्य से अलग करता हो |

आंचलिक कहानी आम कहानियों से विशिष्ट है | ख़ास लक्षण उसे अन्य कहानियों से अलग देते हैं | आंचलिक कहानी के कथानक का आधार अंचल-विशेष की घटनाएँ एवं जनजीवन होता है| तमाम परिस्थितियाँ कथा को एकसूत्र बनाती हैं | अगर आदिवासी क्षेत्र की गौड़ जनजाति कथानक का आधार हो तो उस जाति-विशेष का समग्र जीवन कथा में गुंफित होता है | आंचलिक कहानी का दूसरा महत्वपूर्ण लक्षण लोकसंस्कृति का सजीव चित्रण है | वेशभूषा, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आदर्शों, विश्वासों, भौगोलिक मान्यताओं आदि लोकसंस्कृति के पहलू वास्तविक रूप में चित्रित होने चाहिए |

आंचलिक कहानी की भौगोलिक स्थिति का अंकन अनिवार्य है | भौगोलिक स्थिति से पाठक को अंचल-विशेष के प्रति रूचि एवं विश्वसनीयता उत्पन्न होती है तथा प्रकृति-चित्रण सजीव हो उठता है | आंचलिक कहानी में यथार्थवादी पृष्ठभूमि होनी चाहिए, कथाकार का द्रष्टिकोण यथार्थवादी होना चाहिए | पात्र, वातावरण, परिवेश के चित्रण में कथाकार को कल्पना का सहारा नहीं लेना पड़ता | आंचलिक कहानी में लोकसंस्कृति का निरूपण होता है | मूलत: लोकसंस्कृति लोककथाओं तथा लोकगीतों में आकर्षक ढंग से प्रतिबिम्बित होती है | लोकगीतों के जरिये पाठक अंचल की भावभूमि पर पहुँच जाता है | स्थानीय बोली एवं भाषा के निरूपण के बिना आंचलिक कहानी संभव ही नहीं | कहानी की समग्रता को स्थानीय रंग देने में स्थानीय बोली एवं भाषा की अहमियत है | इसके अलावा प्रभावी वातावरण, अंचल की राजनितिक-आर्थिक स्थिति तथा जन-जागरण का संकेत भी महत्त्व रखता है |

आज समाज आसमां छूने की कोशिश कर रहा है | वर्तमान सन्दर्भ में पिछडे वर्ग से समाज या देश अवगत हो यह आवश्यक है | आंचलिक कहानी ग्रामीण वातावरण एवं पिछड़े हुए वर्ग के जीवन से साक्षात्कार कराती है | आंचलिक कहानी द्वारा न केवल कहानीकार के; पाठक-समाज के सौन्दर्यवादी दृष्टिकोण का विकास होता है | पाठक भले ही उस अंचल-विशेष से प्रत्यक्ष अनुभव नहीं कर सकता बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से उसका ज्ञान प्राप्त करता है | हमने आगे भी देखा कि आंचलिक कहानी में यथार्थ का अंकन होता है | यथार्थ-अंकन से वास्तविकता का ज्ञान होता है | आंचलिक कहानी की आवश्यकता राष्ट्रीय एकता की स्थापना में अनिवार्य है | इस प्रकार की कहानी में अंचल-विशेष की भिन्न-भिन्न जातियों की एकता, सदभावना, सहिष्णुता, प्रेम जैसे मनोभावों द्वारा राष्ट्रीय एकता की स्थापना होती है | जन-जागरण को लेकर भी इसका महत्त्व है | “अंचल विशेष की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण करने के साथ-साथ आंचलिक कहानीकार उन स्थितियों के प्रति जनता की प्रतिक्रिया और नए विचारों के संपर्क के कर्ण होने वाली उनकी चेतना का वर्णन भी करता है | रूढ़ अंधविश्वासों, सामाजिक अनीतियों, प्रशासन की ज्यादतियों, अनाचार, रिश्वत, बेईमानी, स्वार्थपरता आदि के विरुद्ध क्रांति की लहर का संकेत कर वह जागरूक और सजग जनता को करवट लेती हुई चित्रित करता है |”४ भारत धर्म, जाति, भाषा को लेकर वैविध्यपूर्ण देश है | हर समाज की अपनी संस्कृति है | अत: आंचलिक कहानी में निरुपित लोक-संस्कृति से परिचित होकर पाठक-समाज को लोक-साहित्य का ज्ञान भी मिलता है | संक्षेप में आंचलिक कहानियां समाज को आंचलिकता के प्रति आकर्षित करती हैं |

यों तो कहानी का विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ चलता रहा | उपदेश प्रधान लघु-कथाएं तात्विक दृष्टि से कहानी के आकर में न होने से उन्हें कहानी के रूप में स्वीकारा नहीं गया | कहानी का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी से माना जाता है | हिंदी कहानी के विकास को चार चरण में बाँटा गया है | प्रथम चरण : सन १८७० से १९१५ तक, द्वितीय चरण : सन १९१५ से १९३५ तक, तृतीय चरण : सन १९३५ से १९५० तक, चतुर्थ चरण : सन १९५० से अब तक |

सामान्यत: कहानी के विकास को लेकर जब बात होती है तो प्रेमचंद को केंद्र में रखा जाता है | लेकिन आंचलिक कहानी की बात की जाती है तो उन्हें विशेष याद नहीं किया जाता, क्योंकि उन्होंने ग्रामीण समस्याओं को उभारा है | प्रथम चरण की कहानियाँ अंग्रेजी एवं बंगला कहानियों से अधिक प्रभावित हैं, जिनमें संवेदना का प्राधान्य रहता है | माधवप्रसाद, भगवानप्रसाद, विश्वम्भरनाथ आदि इस चरण के कहानीकार हैं | उनकी कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में छपती थी | द्वितीय चरण के कहानीकारों में जयशंकर प्रसाद प्रसिद्ध हैं | प्रसाद की परंपरा को रायकृष्णदास, विनोद शंकर व्यास और चतुरसेन शास्त्री ने विकसित किया | इस चरण में यों तो प्रेमचंद, सुदर्शन आदि ने कहानी लिखी, लेकिन उनकी कहानियों में आंचलिक तत्व की अपेक्षा लोक कल्याण एवं संवेदना का पुट था | तृतीय चरण में कहानी विविधता लेकर उपस्थित हुई | जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी आदि ने कहानी को मनोवैज्ञानिक धरातल दिया | यशपाल, रांघेय राघव,

भैरवप्रसाद गुप्त, उग्र जी आदि ने समाज के सामाजिक प्रश्नों को वाणी दी | आगे चलकर उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा जैसे कहानीकारों ने सामाजिक यथार्थ को लक्ष्य बनाया |

चर्तुथ चरण अर्थात् सन १९५० के बाद कहानी को विषय-वैविध्य मिला | इस युग की कहानियों को स्वातंत्र्योत्तर युग की कहानियाँ कहा जाता है | इस युग में पुराने कहानीकारों की एक पीढ़ी रही, दूसरी राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, फणीश्वरनाथ रेणु, मोहन राकेश आदि ने मोटे तौर पर कहानियाँ लिखी | सन साठ के बाद ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया, हिमांशु जोशी, महीपसिंह, राजेंद्र अवस्थी आदि कहानीकारों की कतार खडी हुई | सन १९५० के बाद कहानी क्षेत्र में नया आन्दोलन हुआ और नयी कहानी,अकहानी, सचेतन कहानी, समकालीन कहानी, आंचलिक कहानी जैसे रूप उभरे |

कहानी में आंचलिक परिवेश का चित्रण तो सन पचास से पहले भी मिलता है | जिनमें शिवप्रसाद सिंह का नाम आदर के साथ ले सकते हैं | शिवप्रसाद सिंह ने 'कर्मनाशा की हार', माटी की औलाद', 'गंगा तुलसी' आदि कहानियों में उत्तरप्रदेश के पूर्वी अंचल के गावों को यथार्थ रूप में अंकित किया है | "वह सम्पूर्ण अंचल और ग्राम परिवेश अपने सरे स्पंदन के साथ उनकी कहानियों में मूर्त हो उठा है , जिसका उन्होंने चित्रण किया है | आपकी कहानियों में आंचलिकता और खड़ीबोली का प्रशंसनीय संतुलन है |"५ आंचलिक कहानी लिखने वालों में मार्कंडेय दूसरी कड़ी हैं | आप भारतीय ग्रामीण जनजीवन को निरुपित करने में सजग हैं | ग्रामीण भावभूमि का चित्रण कर, ख़ासकर अंचल की प्रगति को चित्रित कर आपने प्रगतिशीलता दिखाई है | 'हंसा जाई अकेला', 'भाई', 'पान फूल' आदि संग्रह इस बात के साक्ष्य हैं | स्वाधीन भारत के गावों में हुए परिवर्तन को यथार्थ रूप में अंकित करने में आप माहिर हैं |

अधिकांश निम्नवर्गीय पत्रों को लक्ष्य कर लिखने वाले शैलेश मटियानी बिलकुल आंचलिक कहानीकार हैं | 'सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ', 'सफर पर जाने से पहले', मेरी प्रिय कहानियाँ' आदि संग्रहों में पहाड़ी क्षेत्र समग्र रूप से उभरा है | तो 'गदले जल का रिश्ता', 'एक संधि' जैसे संग्रह देने वाले शानी भी कम नहीं |

आंचलिक कहानी क्षेत्र में फणीश्वरनाथ 'रेणु' का नाम आदर के साथ लिया जाता है | सही अर्थ में हिंदी कथा साहित्य में आंचलिकता के वे सूत्रधार हैं | 'तीसरी कसम', 'ठेस', 'तपेदिक', 'लालपन की बेगम', 'टेबुल', 'अतिथि सत्कार', 'सपेरा', 'इन्हें भी इंतजार है', 'मुरदा सराय', 'भूदान', 'विभाजन', 'कलंक', 'तीन बिंदिया', 'विघटन के क्षण', 'परती और परदेश' आदि कहानियों में रेणु जी ने अंचल की लोक संस्कृति, आचार-विचार, धार्मिक अन्धविश्वास एवं रूढ़ियाँ, समाज-जीवन, स्त्री-जीवन को सजीवता दी है |

राजेन्द्र अवस्थी जैसे कहानीकारों ने इस परंपरा को अबाध रूप से गतिशील किया है | उन्होंने बस्तर (म.प्र,)जिले की गौड़ जाति के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है, क्योंकि उनका बचपना वहां बीता था | अवस्थी जी ने भोगा हुआ यथार्थ 'लमसेना', 'लाल झंडा', 'ऊसर खेत', 'सिरदार', 'महुआ आम के जंगल', 'जलता सूरज', 'तीर का तिनका', 'हिरौंदा', 'त्राहिमाम', 'जड़बंधन', 'इस पार उसपार', 'कगार का पानी', 'बेबात की बात', 'माया माटी और मानव' आदि कहानियों में अंकित किया है | फिर तो इस परंपरा को आगे बढ़ाने में हिमांशु जोशी जैसे अनेक समकालीन कहानीकारों ने महत्वपूर्ण योग दिया है | "विभिन्न अंचलों से कहानीकारों ने अपने-अपने क्षेत्र में वैश्वीकरण के अभिशाप से गाँव-कस्बे की मरती हुई आत्मा और क्षरित होते श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों का वृतान्तिक रूप रचा है |"६ अधिकांश आंचलिक कहानीकार अंचल के पिछड़े वर्ग या शोषित लोगों से सहानुभूति रखते हैं इसीलिए वे सर्वहारा के प्रति न्याय तथा उसके उत्थान के प्रयत्नों को तीव्रत्तर करने का स्वर देते हैं | इस वर्ग की पीड़ा लेखक के स्वर से मुखरित होती है | एक प्रबल राजनैतिक चेतना भी दिखाई देती है | नारी स्वातंत्र्य, शिक्षा का प्रचार तथा कुरीति, अन्धविश्वास के प्रति विद्रोह, परंपरा का खंडन, धार्मिक आडम्बर एवं कुत्सित प्रवृत्तियों का विरोध, भ्रष्टाचार के विरुद्ध घर आक्रोश भी आंचलिक कहानियों में व्यक्त होता है |

इस प्रकार कहानी क्षेत्र में नए आन्दोलन के साथ कहानी ने आंचलिक रूप धारण किया | उसकी अलग अवधारणा बनी | आंचलिक कहानीकारों ने कथा साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की| रेणु द्वारा हुआ आंचलिकता का बीजवपन धीरे धीरे पल्लवित हुआ और आज आंचलिक कहानी ने विकसित होकर वटवृक्ष का आकर धारण किया |

सन्दर्भ-संकेत :

I. डॉ. नगीना जैन, आंचलिक और हिंदी उपन्यास, पृ. ७
II. सहदेव कांबले, फनीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में आंचलिकता, पृ. ३४
III. Enecyclopedia American, Vol-17, पृ. ५७१
IV. सहदेव कांबले, फनीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में आंचलिकता, पृ. ३७
V. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, भूमिका से
VI. प्रो. सरिता वाशिष्ठ, हिंदी साहित्य वर्तमान दशक, पृ. ३६

****

डॉ. सोमाभाई पटेल
हिंदी विभाग
नीमा गर्ल्स आर्ट्स कॉलेज
गोझारिया

Copyright © 2012 - 2017 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat